National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(63): 29-30
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

नीरज फोन्दणी
शोध छात्र,
स्पर्श हिमालय यूनिवर्सिटी,
देहरादून

Correspondence:
नीरज फोन्दणी
शोध छात्र,
स्पर्श हिमालय यूनिवर्सिटी,
देहरादून

महाभाष्य पर टीकाकारों का योगदानः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

नीरज फोन्दणी

सारांश

पतञ्जलि का महाभाष्य संस्कृत व्याकरण का सर्वोच्च ग्रंथ है. जो अष्टाध्यायी और वार्तिकों पर भाष्य रूप में रचित हुआ।। इसके बाद अनेक विद्वानों ने इस ग्रंथ की व्याख्या और विवेचना की. जिससे संस्कृत व्याकरण की परम्परा और अधिक सुदृढ़ हुई। इन टीकाकारों ने न केवल महाभाष्य के जटिल अंशों का स्पष्टीकरण किया, बल्कि व्याकरणशास्त्र की दार्शनिक एवं तात्त्विक पृष्ठभूमि को भी स्पष्ट किया। प्रस्तुत शोधपत्र में महाभाष्य पर प्रमुख टीकाकारों के योगदान का विश्लेषण । प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना

संस्कृत व्याकरण की परम्परा में पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि को 'व्याकरण त्रयी'कहा जाता है। पतञ्जलि का महाभाष्य केवल व्याकरण नहीं, बल्कि भाषा-दर्शन, तर्क और मनोविज्ञान का भी अद्भुत संगम है। महाभाष्य की गूढ़ता के कारण बाद के आचार्यों ने इस पर अनेक टीकाएँ लिखीं। इन टीकाओं के माध्यम से न केवल महाभाष्य की व्याख्या हुई, । बल्कि उसमें निहित तात्त्विक दृष्टियों का भी विस्तार हुआ।

महाभाष्य की परम्परा का संक्षिप्त परिचयः

महाभाष्य का ग्रंथ तीन मूल स्रोतों पर आधारित है -

1. पाणिनि की अष्टाध्यायी
2. कात्यायन के वार्तिक।
3. पतञ्जलि का महाभाष्य

महाभाष्य की भाषा, शैली और तर्क इतनी गूढ़ है कि बिना किसी व्याख्या के उसे समझना कठिन है। इसलिए उसके अर्थ को स्पष्ट करने हेतु अनेक टीकाकार उत्पन्न हुए।

महाभाष्य पर प्रमुख टीकाकार एवं उनका योगदानः

1. कय्यट 'प्रदीप' टीका

काल. 11 वीं शताब्दी

ग्रंथः महाभाष्यप्रदीप

योगदानः कय्यट की प्रदीप टीका महाभाष्य पर सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रमाणिक मानी जाती है। उन्होंने महाभाष्य के कठिन तात्पर्यों को सरल एवं तर्कसंगत रूप से प्रस्तुत किया। उन्होंने पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि की त्रयी के विचारों का समन्वय किया।

कय्यट की शैली स्पष्ट, संतुलित और शिक्षणोपयोगी है।

2. नागेश भट्ट - 'प्रदीपोद्योत'

कालः 17वीं शताब्दी

ग्रंथः महाभाष्यप्रदीपोद्योत

योगदानः नागेश भट्ट ने कय्यट की प्रदीप पर टीका लिखी, जिसे 'प्रदीपोद्योत' कहा जाता है।

उन्होंने कई विवादास्पद स्थलों पर अपने मत प्रस्तुत किए।

वे एक सिद्धान्तवादी व्याकरणाचार्य थे जिन्होंने व्याकरण को मीमांसा और न्याय से जोड़ा।

3. भरतमल्लिक महाभाष्यदीपिका

योगदानः भरतमल्लिक की टीका अब पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं है, परन्तु उनके उद्धरणों से स्पष्ट है कि वे व्याकरण के साथ भाषादर्शन के गूढ़ तत्त्वों को भी महत्त्व देते थे।

4. पुट्टकेशी - महाभाष्यविवरण (कथित)

योगदानः इनकी टीका में व्याकरण के दार्शनिक पक्षों पर विशेष बल दिया गया।

5. शेषकृष्ण - महाभाष्यसार

योगदानः इन्होंने महाभाष्य की संक्षिप्त व्याख्या प्रस्तुत की. जो शिक्षण प्रयोजन के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

अन्य टीकाएँ एवं उनकी विशेषताएँ.

1.गङ्गाधर - महाभाष्यव्याख्या में भाष्य के गूढ़ अंशों पर स्पष्टीकरण।

2.भोजराज सरस्वतीकण्ठाभरण में व्याकरण दर्शन के रूप में महाभाष्य के अंशों का विवेचन।

3.राजेन्द्र मिश्र आधुनिक काल में महाभाष्य पर आलोचनात्मक अध्ययन।

महाभाष्य-टीकाओं का तुलनात्मक अध्ययनः

टीकाकार	ग्रंथ	विशेषता	शैली
कय्यट	प्रदीप	मूल व्याख्या का आधार	सटीक और तर्कसंगत
नागेश भट्ट	प्रदीपोद्योत	प्रदीप का व्याख्यान	विवादास्पद एवं विश्लेषणात्मक
भरतमल्लिक	दीपिका	तात्त्विक पक्ष	भावप्रधान
पुट्टकेशी	विवरण	दार्शनिक दृष्टि	गूढ़
शिषकृष्ण	सार	शिक्षणोपयोगी	संक्षिप्त

महाभाष्य टीकाओं का दार्शनिक महत्त्वः

महाभाष्य केवल व्याकरण नहीं, बल्कि वाक्य, वाचक और वाच्य के दार्शनिक संबंधों को भी उजागर करता है। टीकाकारों ने इन अवधारणाओं को न्याय. मीमांसा और वेदान्त के संदर्भ में व्याख्यायित किया।

निष्कर्ष

महाभाष्य पर टीकाकारों का योगदान संस्कृत व्याकरण परम्परा की अमूल्य धरोहर है। कय्यट, नागेशभट्ट आदि विद्वानों ने न केवल पतञ्जलि की व्याख्या की, बल्कि उसे नए आयाम प्रदान किए। आज भी महाभाष्य का अध्ययन बिना प्रदीप और। प्रदीपोद्योत के अधूरा माना जाता है। इन टीकाओं के माध्यम से भारतीय भाषा-दर्शन की निरन्तरता और विकास दोनों स्पष्ट होते हैं।

संदर्भ सूची (References):

1. पतञ्जलि - महाभाष्य, सम्पा० पं. श्रीराम शर्मा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
2. कय्यट- महाभाष्यप्रदीप, वाराणसी संस्करण।
3. नागेशभट्ट - प्रदीपोद्योत. चौखम्बा प्रकाशन ।
4. विश्वनाथ शास्त्री - संस्कृत व्याकरण का इतिहास, दिल्ली विश्वविद्यालय।
5. भट्ट, के. एस. - History of Sanskrit Grammar] Motilal Banarsidass] Delhi
6. सुब्रह्मण्य शास्त्री Patanjali and his Commentators] Madras University Press